स्वराज की ज्ञान-दृष्टि

अविनाश झा
14 अगस्त 2025

ज्ञान को संगठित करने की प्रक्रिया से ही सभ्यताओं का जन्म होता है। सभ्यता, यानी सिविलाइजेशन, संगठित ज्ञान के उदय का परिणाम है। इस संगठन से ज्ञान की श्रेणियाँ बन जाती हैं। जैसे भारतीय सभ्यता में किसी समय वेदों के सर्वोच्च ज्ञान के रूप में स्थापना। कबीर की वाणी में हम संगठित ज्ञान - जिसे कबीर षड्-दर्शन से इंगित करते हैं - के ख़िलाफ़ ज्ञान की व्याख्या सहज ज्ञान के रूप में देखते हैं।

यह गौरतलब है कि सभ्यताओं के उदय से पहले ही हज़ारों-लाखों वर्षों से मनुष्य जीवन चलता आ रहा है। सभ्यताएं बनती हैं, बिगड़ती हैं, और नष्ट भी होती हैं। किंतु सामान्य जीवन चलता ही रहा है। सामान्य जीवन में ज्ञान, नैतिकता, और सहजीवन के सारे आधार एक साथ विद्यमान होते हैं। हम क्रमबद्ध तरीके से नहीं कह सकते हैं कि पहले ये हुआ और फिर वो हुआ। लोक की उत्पत्ति की कहानियाँ मनुष्य की कल्पना की उपज हैं और जीवन की समझ बनाने में उनका मूल्य भी है। पर किसी एक कहानी जैसे एवोल्यूशन की थ्योरी का इस समझ पर कोई एकाधिकार नहीं है।

सामान्य जीवन विविधताओं का भंडार है और ये बदलता रहता है - नित नवीन है। सामान्य जीवन में ज्ञान का रूप है लोकविद्या और समाज के संगठन का स्वरूप है स्वराज।मनुष्य के सामाजिक जीवन की मूल प्रवृत्ति स्वराज है। कह सकते हैं कि 'Swaraj is the natural state of society (or humanity)'। इसके विपरीत आधुनिकता की दृष्टि में समाज की मूल प्रवृत्ति 'अराजकता' है। हॉब्स के अनुसार 'राज्य' के उदय से पहले मनुष्य जीवन पाशविक और क्रूर होता है। राज्य के संगठित होते ही समाज का विभाजन बहुजन और विशिष्ट-जन में हो जाता है। ज्ञान और स्वराज परंपराएं चलती रहती हैं पर इनका स्थान बहुजन के सामान्य जीवन में होता है।

सामान्य जीवन की ये शर्त है कि उसमें सत्य, भाईचारा, सौंदर्य के मूल्य, मूल्य के रूप में निहित होते हैं। अगर सभ्यता को सभ्य समाज के अर्थ में लिया जाए तो सभ्यता हमेशा ही मनुष्य समाज का एक गुण रहा होगा।

भारतीय परंपराओं में एक तरफ़ तो वेद की वर्चस्ववादी व्याख्या और श्रेणी बद्ध ज्ञान की संरचना देखते हैं। दूसरी ओर ज्ञान के लिए मनुष्य की काया को ही पर्याप्त माना गया है। कोई भी, कहीं भी, बिना किसी बाहरी अधिसंरचना के ज्ञान प्राप्त कर सकता है। इसके साथ ही लोक में व्याप्त ज्ञान यानी लोकविद्या और शास्त्रीय ज्ञान के बीच पारस्परिक संबंध की संभावना निहित है। दूसरी सभ्यताओं में भी शायद रही हो। वैसे यूनानी सभ्यता में 'नगर' का एक विचार है और ज्ञान के स्थान के रूप में नगर को ही माना गया है। ग़ैर-नागरी जीवन को नगर की ज़रूरतों को पूरा करने के माध्यम के रूप में ही देखा गया।

आधुनिक विज्ञान के उदय के सौ-दो सौ वर्षों के बाद यूरोप में विश्वव्यापी वर्चस्व का एक विचार उभरता है। नए ज्ञान और ज्ञान के नए संगठन के आधार पर यूरोप द्वारा सारी दुनिया पर हावी होने का और सारी दुनिया के उत्थान का एकमात्र स्रोत बनने का साम्राज्यवादी विचार बनने लगता है।'साइंस' की अवधारणा बनती था है और सभ्यता का एक विमर्श बनता है। ऐतिहासिक सभ्यताओं के तथा-कथित धार्मिक आधार का अतिक्रमण करते हुए एक नई सार्वभौमिक ज्ञान आधार की कल्पना बनती है। यूरोपीय ज्ञानोदय यानी एनलाइटेनमेंट के रूप में समाज में एक ज्ञान आंदोलन उभरता है। साइंस के आधार पर मानव समाज को अंधकार से प्रकाश

की ओर ले जाना और अभाव से मुक्ति दिलाना - यह कल्पना सारे विश्व पर हावी हो जाती है। साइंस के विशाल अधिसंरचनाएँ (इन्फ्रास्ट्रक्चर) सारी दुनिया में फैल जाते हैं। साइंस के अंदर ज्ञान की व्यवस्था में भौतिकी ही सारे ज्ञान का आधार बनता है। साइंस की चकाचौंध में ज्ञान की अन्य धाराएँ अंधकार में चले जाते हैं।इसके साथ ही ग़ैर यूरोपीय मानव की मानवता भी अंधकार में चली जाती है।

अज्ञान के अंधकार और भौतिक अभाव से मुक्ति का सपना तो बीसवीं शताब्दी में टूट कर बिखर गया। यूरोपीय साम्राज्यवाद और औपनिवेशिक शासन के ख़िलाफ़ दुनिया भर में मुहिम छिड़ी और स्वतंत्र देशों की अपनी सरकारें बनी। लेकिन इस उत्तर-औपनिवेशिक दुनिया में ज्ञान की औपनिवेशिक श्रेणियाँ बनी रहीं जिससे स्वराज मजबूत होने की बजाय कमजोर ही होता गया। विनोबा ने कहा है कि मुगलों के शासन में देश गुलाम था पर गाँव आज़ाद थे। अंग्रेज़ों के समय देश और गाँव दोनों गुलाम थे। स्वतंत्रता के बाद देश आज़ाद है पर गाँव गुलाम है।

आधुनिकता के उत्तर काल में सभ्यता-मूलक ज्ञान की एक नई पहचान बन रही है जो सिर्फ़ ग्रीको-यूरोपीय सभ्यता तक सीमित नहीं है। सभ्यता विमर्श में एक तरफ़ तो सभ्यताओं को श्रेणी बद्ध तरीके से देखा जाता रहा जिसमे यूरोपीय सभ्यता शीर्ष पर है। दूसरी ओर सभ्यता को विरोध के स्वर में स्वायत्तता के अर्थ में देखा गया। खास कर अफ्रीकी सभ्यता के दावे में यूरो-अमरीकन साम्राज्यवाद के विरोध का स्वर मुखर है जिसकी अभिव्यक्ति आज भी पैन-अफ्रीकन विचारधारा के रूप में देखी जाती है।

यूरोपीय सभ्यता के ज्ञान का दावा साइंस के रूप में आया। सूचना क्रांति के बाद अब कृत्रिम बुद्धि, यानी कि एआई, के रूप में आता है। चीन का साइंस और एआई के मास्टरी का दावा है और साथ ही समाज के संगठन के विचार में सभ्यता मूलक ज्ञान का दावा है। भारतीय सभ्यता ज्ञान का कैसा दावा प्रस्तुत कर रही है? क्या सभ्यता सिर्फ़ संगठित ज्ञान के रूप में ही होती है? भारतीय सभ्यता के जो विमर्श आज प्रचलित हो रहे हैं उनमें ज़ोर इस पर है कि हम कितने महान थे कि साइंस की कई उपलब्धियाँ हमे पहले ही हासिल थीं।

इसके विपरीत हम भारतीय सभ्यता में स्वराज के दावे प्रस्तुत कर सकते हैं। हम एक असंगठित ज्ञान का दावा पेश कर सकते हैं। सामान्य जीवन के असंगठित लोकस्थ ज्ञान के बिना सभ्यता ज़िंदा नहीं रह सकती। भारतीय सभ्यता में समाज की मूल प्रकृति के रूप में स्वराज की पहचान थी जिसके कारण भारत विविधताओं का देश रहा है और समाज के संगठन में स्थानीय व्यवस्थाओं की परंपरा रही है।